स्मारिका १९९०

३८ वाँ वार्षिकोत्सव

'मगध कलाकार'

द्वारा प्रस्तुत

झाँसी की रानी

(हिन्दी ऐतिहासिक नाटक)

८-१० अक्टूबर १९९०

कालिदास रंगालय पटना

लेखक : चतुर्भुज

निर्देशक : अनन्त कुमार

सम्पादक : अजय कुमार

MAGADH ARTIST

Scanned by CamScanner

कृपया ध्यान दें

यदि नाटक को आगे बढ़ाना है, रंगकर्मियों को सम्मान दिलाना
है, नाटक को आजीविका से जोड़ना है और
वातावरण को सुरुचिपूर्ण बनाना है
तो
नाटक की पढ़ाई और प्रशिक्षण
विश्वविद्यालयी स्तर पर लाना अनिवार्य
है। इन्टरमीडियेट से एम. ए. स्तर तक
'नाट्यशास्त्र' को लाना होगा। इसके लिए प्रयास करें।

—'मगध कलाकार'

Scanned by CamScanner

सम्पादकीय

मुझे काफी प्रसन्नता हो रही है कि 'मगध कलाकार' (MAGADH ARTISTS) की स्मारिका के सम्पादन का अवसर मुझे मिला। 'मगध कलाकार' बिहार की एक ऐसी संस्था है जो विगत अड़तीस वर्षों से ऐतिहासिक-पौराणिक नाटकों का मंचन गाँवों तथा शहरों में करती आ रही है।

आज हम सब कम्प्यूटर जैसे अत्याधुनिक मशीनों के साथ इक्कीसवीं सदी में प्रवेश करने जा रहे हैं और टेलिविजन, विडियो और सिनेमा ने नाटक को आघात पहुँचाया है। लेकिन यह सत्य है कि नाटक न तो कभी मरा था और न आगे मरेगा क्यों कि नाटक ही सभी कला-माध्यम का आधार है।

मैं 'मगध कलाकार' के संस्थापक श्री चतुर्भुज तथा उन सभी बुजुर्ग और युवा सदस्यों का आभारी हूँ जिन्होंने मुझ पर इस स्मारिका के सम्पादन का उत्तरदायित्व सौंपा। मुझे पूरी आशा है कि पाठकों को यह स्मारिका पसन्द आयगी। किसी भी प्रकार की गलती के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ।

मैं उनके प्रति भी कृतज्ञ हूँ जिन्होंने किसी-न-किसी रूप में स्मारिका के प्रकाशन के लिए योगदान किया।

९ एवं १० अक्टूबर '९०

अजय कुमार
सम्पादक

Scanned by CamScanner

शुभकामनाएँ

'मगध कलाकार' बड़े लम्बे समय से सक्रिय है। यह बात ठीक है कि ऐतिहासिक और पौराणिक नाटकों के प्रदर्शन में बड़ी कठिनाइयाँ है। मैं यह आशा करता हूँ कि 'मगध कलाकार' के नाटकों में आधुनिक संवेदना का समावेश रहता होगा और वे जीवन की विडंबना और आदमी की हालत और नियति को उद्‌घाटित करते होंगे। मैं यह भी आशा करता हूँ कि आपके प्रयासों से सार्थक और संवेदनशील रंगमंच को बढ़ावा मिलेगा।

—नेमिचन्द्र जैन,
सम्पादक, 'नटरंग', दिल्ली

दुर्भाग्यवश फिल्मों और दूरदर्शन ने नाट्यमंचन को काफी आघात पहुँचाया है। धीरे-धीरे नाटक के दर्शक और प्रेमी घटते जा रहे हैं, पर मेरा दृढ़ विश्वास है कि जीवन्त कलाकारों से प्रत्यक्ष-अभिनय-साक्षात्कार एक ऐसा अनुभव है जिसे किसी डिब्बे या किसी पर्दे पर चलती तस्वीरों पर देखकर प्राप्त नहीं किया जा सकता। मंच पर खतरा है, पर मंच मरेगा नहीं-यह मेरा विश्वास है। आपकी संस्था का ऐतिहासिक योगदान है।

—डा॰ शैलेन्द्रनाथ श्रीवास्तव
सांसद, साहित्यकार और नाटकमर्मज्ञ

Scanned by CamScanner

श्रद्धाजंलि

सन् १९५२ ई० से ही 'मगध कलाकार' की नाट्ययात्रा में कुछ ऐसे नाट्यकर्मी एवं समर्पित सदस्य आये जो न केवल अभिनय से जुड़े रहे बल्कि जिन्होंने संस्था के दुख-दर्द को अपना दुख-दर्द महसूस किया, इसके सुख को अपना सुख जाना। इन समर्पित नाट्यकर्मियों ने इस संस्था के अलावा और भी कई नाट्य संस्थाओं की सेवा की। इन सक्रिय और पुराने रंगकर्मी के निधन से एक बड़ा अभाव आया।

हम उन श्रद्धेय कलाकारों के प्रति श्रद्धाजंलि अर्पित करते हैं।

श्रद्धाजंलि-सुमन इन वरीय रंगकर्मियों के नाम

भगवान प्रसाद : पटना

हँसराज सिंह : बख्तियारपुर

महावीर सिंह आजाद : पटना

और

रमेशचन्द्र श्रीवास्तव (चुलबुल) : बख्तियारपुर

Scanned by CamScanner

safari

The Uncommon Luggage

SAFARI SALES LIMITED

Regd Office : 1/A-107/0 Khetani Textile Compound, Bazarward

KURLA, BOMBAY-400 070

Tel. : 5115041, 5145119 Telex : 011-72194 SAFR-IN

Gram : SAFARI BAG

Branches at

PATNA :: AGRA :: AMRITSAR :: AHMEDABAD :: BOMBAY
:: BANGLORE :: CALCUTTA :: CUTTACK :: COCHIN
:: COIMBATORE :: DELHI :: GAUHATI :: HYDERABAD
:: INDORE :: JAIPUR :: KANPUR :: MADRAS
:: NAGPUR : PUNE :: RAIPUR
:: VIJAYAWADA ::

Scanned by CamScanner

ऐतिहासिक नाटक क्यों ?

—चतुर्भुज

आज ऐतिहासिक नाटकों की क्या आवश्यकता है ? हिन्दी नाटक-लेखन में यह प्रश्न बड़े महत्त्व का है। इन दिनों ऐतिहासिक नाटक-लेखन रुक-सा गया है। क्यों ? इसकी क्या आवश्यकता नहीं है ? हम बात-चीत में इतिहास और संस्कृति की चर्चा करते हैं, अपने विगत गौरव की याद कर जीना चाहते हैं। रामायण-महाभारत के पात्रों का, बुद्ध-महावीर-चन्द्रगुप्त-अशोक आदि का उदाहरण हम बात-बात में दिया करते हैं। हमारी संस्कृति से ये सब इस तरह घुल-मिल गये हैं कि हम उनकी उपेक्षा भले कर लें, पर भूल नहीं सकते। तो फिर इन महत् चरित्रों को रंगमंच के माध्यम से जनता के आगे रखना अच्छा है या बुरा—इसका उत्तर स्पष्ट है। आज की पीढ़ी को अगर कुछ करना है तो उसे भूतकाल को भूलना नहीं होगा, उस गौरव को सामने रखना होगा जिसके कारण भारत भारत है। इसलिए मेरे विचार से ऐतिहासिक और पौराणिक नाटकों की परम्परा कायम रखनी चाहिए। पुराण-इतिहास को हम देखते नहीं, लेकिन रंगमंच एक ऐसा माध्यम है जिससे पुराण-इतिहास हमारे सामने सजीव होकर आते हैं।

भारतीय इतिहास एक अगाध सागर है जिसमें अनेक मणि-रत्न छिपे हैं। आवश्यकता है ऐसे लेखकों की जो इस सागर का मन्थन करके मणि-रत्न निकाल-कर दर्शकों को दे सकें। हम साम्प्रदायिक और राष्ट्रीय एकता के नारे लगाते हैं, लेकिन यदि रंगमंच के माध्यम से इस विषय को सामने लायें तो वह अधिक प्रभाव-शाली सिद्ध होगा। पुराण-इतिहास में ऐसी अनेक घटनाएँ हैं जो हमारे मर्म को छूती हैं। आज के अधिकांश नाटक-लेखक रंगमंच की कठिनाइयों का अनुभव किये बगैर रंगमंच के लिए लिखते हैं। ऐतिहासिक-पौराणिक नाटकों के लिए अध्ययन की आवश्यकता है, शायद उतना समय आज का नाटक-लेखक देना नहीं चाहता, इसलिए अच्छे पौराणिक-ऐतिहासिक नाटकों का अभाव है। मेरा मत है कि आज ऐतिहासिक नाटकों की—साथ ही पौराणिक-नाटकों की—वैसी ही आवश्यकता है जैसी आज से वर्षों पूर्व पारसी नाटकों के युग में थी। आज की अभिनय शैली में यह एक महत्त्वपूर्ण योगदान होगा यदि हम ऐतिहासिक और पौराणिक नाटकों को समुचित स्थान दें।

दर्शक भी इसका स्वागत करेंगे, क्योंकि हम पाते हैं कि पौराणिक-ऐतिहासिक फिल्मों में भी कुछ विशेषताओं के कारण सामाजिक फिल्मों से अधिक ही भीड़ होती है, कम नहीं।

हाल में दूरदर्शन ने रामायण और महाभारत का एक लम्बे समय तक प्रसारण किया। ये दोनों ही सीरियल, अनेक खामियों के बावजूद, अन्य सीरियलों की अपेक्षा, अत्यधिक लोकप्रिय हुए। इन्हें बुद्धिजीवियों ने भी सराहा और ग्रामीण दर्शकों ने भी। क्या इससे यह सिद्ध नहीं होता है कि दर्शकों का अन्तर्मन ऐतिहासिक और पौराणिक नाटकों के प्रदर्शन के प्रति उत्सुक है ?

△

Scanned by CamScanner

With Best Compliments From

M/s. PRIYADARSHINI/CLASSICS TAILOR

(Approved retail Showroom of JIYAJEE)

DAK BUNGALOW ROAD

PATNA-800001

With best Compliments from

BHARAT WAGON & ENGINEERING COMPANY LTD.

(*A Subsidiary of* : **Bharat Bhari Udyog Nigam Limited)**
(A GOVERNMENT OF INDIA UNDERTAKING)
'C' BLOCK, MAURYA LOK COMPLEX
DAK BUNGALOW ROAD, PATNA-1
PHONE : 222369, 225586 Gram : BHAWAGON TELEX : 022-314

Manufacturers of

Rly. Wagons, LPG Cylinders, Wagon Components, Structurals for Rail and Road Bridges, Sugar Mill Rollers, Transmission Towers, Power Station Structures, Iron Castings for Sugar Mills etc.

WORKS
MOKAMEH (BIHAR)
MUZAFFARPUR (BIHAR)
BELA (Muzaffarpur) (BIHAR)

OFFICES
CALCUTTA-700 071
(Ph. : 229992, 224133
NEW DELHI-110001
(Ph. : 3310961-62)

Scanned by CamScanner

'मगध कलाकार' (मगध आर्टिस्ट्स)—की रंगयात्रा

कलकत्ता से प्रकाशित 'नाट्यवार्ता' पत्रिका के आधार पर

—मूल प्रस्तुतकर्त्री : प्रतिभा अग्रवाल

पटना से लगभग ४५ कि० मी० दूर गङ्गा के तट पर बसी बख्तियारपुर नगरी के रंगमंच का इतिहास बड़ा पुराना है। कई दशक पहले से इस नगरी में नाटक खेले जाते रहे हैं। बीच में नाटक का जोश ठण्ढा पड़ गया। सन् १९५२ ई० में 'मगध कलाकार' (मगध आर्टिस्ट्स) नाम की नाट्य संस्था की नीव हिन्दी के सुप्रसिद्ध नाटककार-कलाकार श्री चतुर्भुज की प्रेरणा से पड़ी। कलाकारों ने संकल्प लिया कि इस संस्था में पौराणिक और ऐतिहासिक नाटकों के प्रदर्शन की प्रमुखता रहेगी। कारण, सामाजिक नाटकों का प्रदर्शन अन्य संस्थायें किया करती हैं, लेकिन पौराणिक-ऐतिहासिक नाटकों की ओर किसी का ध्यान नहीं जाता। यही पृष्ठभूमि थी 'मगध कलाकार' की स्थापना की और मंचन-विषयक उसके संकल्प की।

संस्था ने सर्वप्रथम जून १९५२ ई० में चतुर्भुज-लिखित ऐतिहासिक नाटक 'सिराजुद्दौला' का मंचन बिहारशरीफ के कुमार पिक्चर हाउस में किया। इस नाटक को देखने के लिये इस तरह भीड़ जुटी और टिकट बिके कि नाटक प्रारम्भ होने के दो घन्टे पहले 'हाउस फुल' का बोर्ड लगाना पड़ा। तब से बराबर इस संस्था का अभिनय होता रहा है। इसके बाद इसका दूसरा अभिनय हुआ पटना के तब के एकमात्र प्रेक्षागृह लेडी स्टीफेन्सन हाल में। नाटक 'कुँवर सिंह' था और शहर के काफी जाने-माने लोग नाटक देखने आये थे।

विश्वप्रसिद्ध नव नालन्दा महाविहार के भवन उद्घाटन के अवसर पर लङ्का, कम्बोडिया, थाईलैण्ड, लाओस आदि के बौद्ध विद्वानों के समक्ष इस संस्था ने 'कलिंग विजय' नाटक का अभिनय किया। फ्रांस के बौद्ध विद्वान-भिक्षु आर्यदेव ने इस नाटक का उद्घाटन किया। इसके समाचार विदेशी पत्रों में भी छपे थे। सन् १९५७ में दिल्ली के गणतन्त्र-दिवस समारोह में इस संस्था ने 'प्राचीन नालन्दा विश्वविद्यालय' की झाँकी प्रस्तुत कर बिहार का प्रतिनिधित्व किया। उस झाँकी में संस्था के सदस्यों के अलावा बर्मा, तिब्बत, कम्बोडिया, लाओस, थाईलैण्ड आदि आठ देशों के बौद्ध विद्वान भी सम्मिलित थे। उस अवसर पर संस्था के सदस्यों को राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद, प्रधानमन्त्री पण्डित नेहरू, लेडी माउण्टबेटन आदि लोगों के सान्निध्य का सुअवसर मिला।

जब स्टेज और फिल्म के सुप्रसिद्ध कलाकार स्वर्गीय पृथ्वीराज कपूर अपने थियेटर को लेकर बिहार आये, तब 'मगध कलाकार' संस्था के निदेशक श्री चतुर्भुज से बिहार के नाटकों के सम्बन्ध में उनकी बातचीत हुई और उन्होंने पटना के बाहर जाकर नाटक देखने की इच्छा प्रकट की। उनकी एवं उनके प्रमुख कलाकारों की सुविधा का ध्यान रखते हुये बख्तियारपुर के रेलवे रंगमंच पर 'कलिंग विजय' नाटक का मंचीकरण दिन में तीन बजे हुआ। संस्था के कलाकारों को उनका आशीर्वचन मिला। खुले रंगमंच पर कई हजार दर्शकों ने उनका स्वागत किया। बम्बई जाकर भी वे इस संस्था को भूले नहीं और पत्र लिखकर प्रेरणा देते रहे।

प्रथम भारत-पाक युद्ध के अवसर पर राष्ट्रीय सुरक्षा कोष हेतु धन-संग्रह के लिये पूर्वी रेलवे के अधिकारियों ने 'मगध कलाकार' के प्रदर्शन मुगलसराय, गया और दानापुर में आयोजित किये। उस अवसर पर

Scanned by CamScanner

'मगध कलाकार' की ओर से चतुर्भुज-लिखित एवं निर्देशित ऐतिहासिक नाटक 'सिराजुद्दौला' का मंचन किया गया।

श्रीचन्द उदासीन कालेज, हिलसा के सहायतार्थ संस्था ने 'झांसी की रानी' और 'कर्ण' नाटकों का मंचन टिकट पर किया। १२ और १३ जुलाई १९७१ को इण्डिया टोबैको कम्पनी ने रांची के समाज कल्याण केन्द्र के लिये रांची सेंट जेवियर्स स्कूल के प्रेक्षागृह में 'झांसी की रानी' और 'सिराजुद्दौला' नाटकों का प्रदर्शन संस्था द्वारा कराया। सन् १९७१ ई० में ही सरकारी अधिकारियों के आग्रह पर झुमरीतिलैया, रामगढ़ और हजारीबाग के भरे सिनेमा हाल में पूर्व कथित दो नाटक सफलतापूर्वक अभिनीत किये गये जिससे करीब तीस हजार रुपये 'मुख्यमन्त्री सहायता कोष' में मिले।

१८५७ ई० की घटनाओं पर आधारित ऐतिहासिक नाटक 'बहादुरशाह' रेल सप्ताह के अवसर पर आमन्त्रित दर्शकों के बीच बख्तियारपुर में अभिनीत किया गया। फिर गया के जिलाधिकारी के अनुरोध पर राष्ट्रीय सुरक्षा कोष के सहायतार्थ 'भीष्म प्रतिज्ञा' और 'झांसी की रानी' नाटक गया और नवादा के सिनेमा हॉल में अभिनीत किये गये। यह घटना जुलाई १९७२ की है। उसी वर्ष जून में 'झांसी की रानी' नाटक पटना के रवीन्द्र भवन में मंचन कर इस नाट्य संस्था ने अपना बीसवाँ वार्षिकोत्सव मनाया। उस अवसर पर अनेक गणमान्य लेखक, शिक्षाविद्, कवि, कलाकार, पत्रकार और सरकारी अधिकारी उपस्थित थे। १९७२ की दो अक्टूबर को जब देश भर में आजादी की रजत जयंती मनायी जा रही थी तो 'मगध कलाकार' ने पटना के रवीन्द्र भवन में ही १८५७ के स्वाधीनता युद्ध पर आधारित नाटक 'बहादुरशाह' का प्रदर्शन किया जिसका उद्घाटन पटना हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश श्री ऊँटवालिया ने किया।

सन १८५७ ई० के स्वाधीनता संग्राम में ८० वर्षीय बाबू कुंवर सिंह ने बिहार का नेतृत्व किया था और आजमगढ़ तक के क्षेत्र को अपने कब्जे में किया था। कुंवर सिंह बिहार के भोजपुर जिलान्तर्गत जगदीशपुर के जमींदार थे। उनके भग्न दुर्ग से सटे खुले मन्च पर कुंवर सिंह जयंती के अवसर पर २३ अप्रैल १९७३ को चतुर्भुज लिखित एवं निर्देशित नाटक 'कुंवर सिंह' का मंचन किया गया। दर्शकों की संख्या २५ हजार से अधिक ही थी। उसी अवसर पर 'कुंवर सिंह' और झांसी की रानी' नाटकों का मंचन बक्सर और आरा के सिनेमा हॉल में भी हुआ।

१९७४ में पूर्वी रेलवे दानापुर प्रमण्डल के अधिकारियों के अनुरोध पर २५ अगस्त से १ सितम्बर तक दानापुर, मुगलसराय (उत्तर प्रदेश), गया और झाझा के सिनेमा हॉलों में आठ दिनों के लगातार मंचन का कार्यक्रम आयोजित हुआ। टिकट से प्राप्त आय की पूरी राशि एक महिला कालेज के विकास के लिये दे दी गयी। अभिनीत नाटक थे 'झांसी की रानी' और 'पाटलिपुत्र का राजकुमार'। 'पाटलिपुत्र का राजकुमार' नाटक के निर्देशक थे श्री अनन्त कुमार।

सन् १९७५ की पटना की भीषण बाढ़ से इस संस्था को काफी क्षति पहुँची। संस्था के निदेशक के घर में रखे क्लब के महत्वपूर्ण कागजात, दुर्लभ फोटोग्राफ, कीमती ऐतिहासिक ड्रेस, परिश्रम से बनाये हुए स्टेज सेट्स, टेप रेकार्डर आदि शीघ्र ही जल द्वारा आत्मसात कर लिये गये। लगा, अब संस्था बैठ जायेगी। लेकिन कलाकारों ने प्रकृति की इस चुनौती को स्वीकार किया। नये जोश से दो नाटकों का रिहर्सल प्रारम्भ हुआ। वे नाटक थे 'नूरजहाँ' और 'कुंवर सिंह'। इन नाटकों का मंचन दानापुर, मुगलसराय और गया के सिनेमा हालों में लगतार ६ दिनों तक बाढ़ सहायता कोष के लिए आयोजित किया गया। आयोजक थे पूर्वी रेलवे दानापुर प्रमण्डल के अधिकारीगण। बिहार के राज्यपाल श्री आर० डी० भण्डारे ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया और पूर्वी रेलवे के जनरल मैनेजर श्री ई० जे० सिमोइज मुगलसराय के शो में उपस्थित थे।

Scanned by CamScanner

मुंगेर जिला के सब-डिविजनल मुख्यालय जमुई में इस संस्था द्वारा स्थानीय सिनेमा हाल में शहरी और ग्रामीण जनता के लाभार्थ लगातार चार दिनों तक 'कुंवर सिंह', 'झाँसी की रानी' और 'पाटलिपुत्र का राजकुमार' नाटकों का मंचन हुआ। टिकट से प्राप्त आय जमुई में एक स्टेडियम बनाने के लिये दी गई।

फरवरी १९७७ में नव-नालन्दा महाविहार द्वारा आयोजित दीक्षान्त समारोह में देश-विदेश के अनेक विद्वान जुटे थे। महाविहार के अधिकारियों के अनुरोध पर उन विद्वानों तथा स्थानीय जनता के समक्ष 'पाटलिपुत्र का राजकुमार' नाटक मंचित हुआ। यह नाटक बौद्ध साहित्य के अध्येता और नाटककार श्री चतुर्भुज की बहुचर्चित रचना है जो प्रसिद्ध बौद्ध ग्रन्थ 'दिव्यावदान' की एक कथा पर आधारित है। इंग्लैण्ड के भाषाविद् और भारतीय इतिहास के प्रोफेसर डा० ए० एल० बाशम शुरू से अन्त तक नाटक में उपस्थित थे और उन्होंने अभिनय की भूरि-भूरि प्रशंसा की। इस संस्था ने अपने जीवन के २५ वर्ष पूरे करने पर जुलाई १९७७ में पटना के रवीन्द्र भवन में रजत जयन्ती मनाई जिसका उद्घाटन बिहार के राज्यपाल श्री जगन्नाथ कौशल ने तथा समापन पटना हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश श्री के० बी० एन० सिंह ने किया। उस अवसर पर संस्था की ओर से—'शकुन्तला' (हिन्दी में) और 'दि रानी आफ झाँसी' (अँगरेजी में)—दो नाटकों का मंचन किया गया। महाकवि कालिदास के सुप्रसिद्ध संस्कृत नाटक 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' का हिन्दी अनुवाद तो पहले हो चुका है, लेकिन आज के मंच पर उसका प्रदर्शन कठिन है—यह सोचकर उसके २२ पुरुष-पात्रों को ९, १२ स्त्री पात्रों को तीन, सात दृश्यों को पाँच तथा चार घण्टे की अवधि को दो घण्टे की बनाकर अन्य परिवर्तनों के साथ नाटककार चतुर्भुज ने हिन्दी रूपान्तर किया जो मंच की दृष्टि से सरल हो गया।

अँगरेजी तथा देशी-विदेशी भाषाओं के अनुवाद तो हिन्दी में हो रहे हैं, लेकिन हिन्दी नाटकों का अनुवाद अन्यान्य भाषाओं में कम होता है, अँगरेजी में तो बहुत ही कम। भारतीय स्वाधीनता संग्राम पर चतुर्भुज लिखित हिन्दी नाटक 'झाँसी की रानी' का अँगरेजी मंचसाहित्य को हिन्दी की गिनी-चुनी भेंटों में से एक है। भारतीय विषयवस्तु को लेकर अँगरेजी का यह नाटक आशा के विपरीत बड़ा ही सफल रहा है। पूना फिल्म प्रतिष्ठान में प्रशिक्षित तथा कई फिल्मों के निर्देशक श्री जावेद रहमान ने अँगरेजी अनुवाद तैयार किया। साथ ही नाटक का निर्देशन भी किया। इस संस्था के सदस्यों ने ग्रामीण अंचलों में जा जाकर नाटक करने की प्रेरणा दी है और यह इसके प्रयास का फल है कि बिहार के ग्रामीण अंचलों में अनेक क्लब प्रकाश में आये हैं और वे इस संस्था से नाटक के मंचन में राय मशविरा लिया करते हैं। ग्रामीण अंचलों में नाटक का आन्दोलन चलाना इस संस्था की सबसे बड़ी उपलब्धि है। बिहार में शायद ही कोई ऐसा ग्रामीण या शहरी अंचल है जहाँ चतुर्भुज के नाटक अभिनीत नहीं किये गये हों।

पुराने संस्कृत नाटकों का मंचन आज भी आधुनिक रंगमंच के अनुरूप बना कर किया जा सकता है। इसको ध्यान में रखकर पांचवी-छठी शताब्दी के प्रसिद्ध नाटककार विशाखदत्त-रचित संस्कृत नाटक 'मुद्राराक्षस' सहज-सरल भाषा में रूपान्तरित श्री चतुर्भुज ने किया और श्री भगवान प्रसाद के निर्देशन में, पटना के एक प्रेक्षागृह में इसका मंचन हुआ। प्रसिद्ध रंगकर्मी हबीब तनवीर ने इसका उद्घाटन किया। चाणक्य की भूमिका के लिए संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा, के कुलपति ने भगवान प्रसाद को महाराजा कामेश्वर सिंह पुरस्कार से सम्मानित किया। यह नाटक १९७९ ई० में हुआ।

राष्ट्रीय एकता, साम्प्रदायिक सद्भाव तथा पटना के स्वाधीनता-सेनानी के जीवन पर आधारित चतुर्भुज-लिखित और अजय सिन्हा-निर्देशित नाटक 'पीरअली' का मंचन भारतीय नृत्यकला मन्दिर में हुआ।

सरकारी स्तर पर पटना के गान्धी मैदान में गणतंत्र-दिवस-समारोह पर झांकियों का प्रदर्शन पुनः १९७९ ई०

Scanned by CamScanner

से चला। 'मगध कलाकार' की ओर से १९७९ ई० में 'कुँवर सिंह' और १९८० ई० में 'शेरशाह' की झाँकी निकाली गयी।

बिहार के नाट्य प्रदर्शन में 'मनोरंजन कर' नागपाश की तरह था। संस्थायें टिकट नहीं बेच पाती थीं। यह 'मगध कलाकार' के निर्देशक-संस्थापक का अनवरत प्रयास था कि तत्कालीन मुख्यमन्त्री श्री कर्पूरी ठाकुर ने अमेच्यर नाट्यसंस्थाओं को 'मनोरंजन कर' से मुक्त कर दिया। इससे नाट्यप्रदर्शन को बड़ा बल मिला। इसकी सूचना 'बिहार गजट' के ७-२-१९७८ के अंक में प्रकाशित हुई है।

रंगकर्मियों की संख्या दिन-ब-दिन बढ़ रही है। लेकिन रंगकर्म को रोजी-रोटी से अभी तक जोड़ा नहीं गया है। इसके लिए जरूरत इस बात की है कि इसकी शिक्षा विश्वविद्यालयी स्तर पर दी जाये। काफी दौड़-धूप के बाद, श्री चतुर्भुज के प्रयास से, बिहार में प्रथम बार, इसे ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलपति ने कुछ वर्ष पहले एम. ए. में स्वतन्त्र विषय के रूप में प्रारम्भ किया। लगभग डेढ़ वर्षों तक श्री चतुर्भुज ने उस विश्वविद्यालय में प्रथम नाटक-शिक्षक के रूप में काम किया। अब तक उस विश्वविद्यालय से २५ महिला और पुरुष कलाकार-विद्यार्थी नाट्यशास्त्र में एम. ए. की डिग्री ले चुके हैं। बी. ए. में भी यह विषय प्रारम्भ होने ही वाला है। छात्रों में काफी रुचि है। अन्य विश्वविद्यालय भी इस विषय को प्रारम्भ करें—इसके लिए प्रयास आवश्यक है।

—×—

Tel.—22098 4

With best compliments from :

SUPRA ELECTRONICS INDUSTRIES

Manufacturing & Sales of ET & T T.V.

(A govt. of India Enterprises)

T.V. CLINIC

Servicing centre for all types of T.V.

with home service

For Further Enquiry Please Contact

Supra Electronics Industries

Tube Well no-2, SHEIKHPURA

RAJA BAZAR, PATNA-14

Scanned by CamScanner

अड़तीसवाँ वार्षिकोत्सव

'मगध कलाकार'

द्वारा प्रस्तुत

भारतीय इतिहास का एक ज्वलन्त अध्याय

झाँसी की रानी

हिन्दी ऐतिहासिक नाटक

लेखक : चतुर्भुज

निर्देशक : अनन्त कुमार

सहायक निर्देशक : अशोक प्रियदर्शी

Scanned by CamScanner

हमारे रंगकर्मी

रगमंच संचालक	: आशीष रंजन
व्यवस्था	: शांतरक्षित, शिवपूजन शर्मा, कुमार कश्यप, उमेश प्रसाद, शिवजी सिंह, अमर चन्द्राजिया
रूप सज्जा	: बच्चन लाल
ध्वनि प्रभाव	: कुमार आर्यदेव
वस्तु निर्माण	: श्याम सुन्दर
प्रकाश	: राज कुमार
संगीत	: सन्त दानापुरी, मदन ठाकुर, सुनीता, शुभ्रा, दीपक, रूप क
विशेष सहयोग	: शशिप्रिय वर्मा, राकेश, प्रदीप गांगुली, अर्जुन वर्मा, शीलभद्र, अजय दत्ता, पनंग भूषण।

प्रेसिडेंट	: पद्मश्री श्रीमती विन्ध्यवासिनी देवी
जनरल सेक्रेट्री	: भागवत प्रसाद श्रीवास्तव
सेक्रेट्री	: अशोक प्रियदर्शी
संस्थापक	: चतुर्भुज

Scanned by CamScanner

झाँसी की रानी

(कथानक)

कहानी सन् १८५७ ई० की है जब भारत ने विदेशी हुकूमत के खिलाफ आजादी की पहली जंग छेड़ी थी। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने मध्य भारत में स्वाधीनता के युद्ध का संचालन किया था। उनमें शासन करने के गुण थे, वीरता थी, आत्मसम्मान था। उस युग के सुप्रसिद्ध अंगरेज सेनापति जनरल सर ह्यू रोज को रानी से युद्ध करना पड़ा था। रानी ने उसके दाँत खट्टे कर दिये। लेकिन आपसी फूट के कारण रानी को सफलता नहीं मिली। लोहा टूट गया पर मुड़ा नहीं। रानी ने जान दे दी, पर झुकी नहीं। सेनापति गौस खाँ ने हिन्दू रानी के लिए अपनी जान की बाजी लगा दी। इसी पर आधारित है हमारा आज का नाटक।

झाँसी की रानी

(पात्र परिचय)

लक्ष्मीबाई	—	झाँसी की रानी	—	सुनीता सिन्हा
जवाहर सिंह	—	रानी के सेनापति	—	आशीष रंजन
गौस खाँ	—	रानी के सेनापति	—	दीपक प्रियदर्शी
दूल्हा सिंह	—	रानी के सेनापति	—	अशोक प्रियदर्शी
मोरोपन्त	—	रानी के पिता	—	सन्त दानापुरी
गोविन्द राव	—	एक देशभक्त	—	रूपक प्रियदर्शी
राव साहब	—	पेशवा-प्रतिनिधि	—	रामविलास दास
तात्या टोपे	—	मराठा सेनापति	—	दीपक कुमार
सर ह्यू रोज	—	ब्रिटिश जनरल	—	चतुर्भुज
स्टूअर्ट	—	ब्रिटिश मेजर	—	अनन्त कुमार
सैनिक	—		—	मदन ठाकुर

Scanned by CamScanner

हिन्दी रंगमंच और अनूदित नाटक

—नेमिचन्द्र जैन
सम्पादक, 'नटरंग'

हिंदी नाटक प्रेमियों के बीच एक बात अक्सर सुनाई पड़ती है कि हिंदी रंगमंच पर मौलिक की बजाय अनूदित नाटकों का बोलबाला है। कुछ लोग तो यहां तक कहते है कि आज का हिंदी रंगमंच वास्तव में उधार का रंगमंच है। उसका अपना अलग कोई चरित्र, कोई व्यक्तित्व नहीं है। विशेषकर हिंदी नाटककारों की यह शिकायत रही है कि हिंदी क्षेत्र के रंगकर्मी मौलिक नाटकों की उपेक्षा करके ज्यादातर अनूदित नाटक चुनते हैं। इसलिए धारे-धीरे हिंदी में नाटक-लेखन के प्रति उत्साह कम हुआ है और हिंदी नाटककारों का रंगमंच से संपर्क भी टूटता जा रहा है।

एक हद तक इस धारणा में सच्चाई जरूर है। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि हिंदी भाषा क्षेत्र के शौकिया नाट्य दल अथवा अर्धव्यावसायिक या एक-दो व्यावसायिक रंगमंच, हिंदी के मौलिक नाटकों की तुलना में अनुवादों का ही प्रदर्शन अधिक करते हैं—भारतीय भाषाओं के ही नहीं विदेशी नाटकों के अनुवाद भी। अनुवाद ही नहीं, अनेक विदेशी नाटकों के भारतीय रूपांतर भी बड़ी संख्या में हिंदी रंगमंच पर प्रस्तुत होते रहते हैं।

इस स्थिति की अच्छाई-बुराई की चर्चा से पहले इसके परिप्रेक्ष्य पर कुछ विचार कर लेना उपयोगी होगा। सबसे पहली बात तो यह है कि आमतौर पर हर जीवंत, सक्रिय रंगमंच दूसरे देशों और दूसरी भाषाओं के नाटकों के प्रदर्शन लगभग अनिवार्य रूप से होते हैं। यह बात इंग्लैंड, अमेरिका, रूस, जर्मनी, जापान के रंगमंच के बारे में भी सही है और अपने ही देश के बांग्ला, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के रंगमंच के बारे में भी। वास्तव में, किसी भी भाषा में हर समय इतने नए, प्रासंगिक और श्रेष्ठ नाटक नहीं लिखे जाते कि वे सभी रुचियों, जीवन दृष्टियों और रंग संस्कारों वाले निदेशकों और हर तरह की मंडलियों की जरूरतें पूरी कर सकें। इसलिए अधिकांश मंडलियों को अपने कार्यक्रम में कलात्मक स्तर के साथ-साथ ताजगी, नवीनता, विविधता और रोचकता बनाए रखने के लिए अक्सर दूसरी भाषाओं के नाटकों का सहारा लगभग अनिवार्यतः लेना पड़ता है।

हिंदी रंगमंच के संदर्भ में नाटकों की कमी और अनुवाद पर आग्रह की एक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि भी है। यह आकस्मिक नहीं है कि हिंदी के पहले आधुनिक नाटककार भारतेंदु हरिश्चंद्र ने भी मौलिक नाटकों के साथ-साथ अंग्रेजी, बांग्ला और संस्कृत के नाटकों के अनुवाद या रूपांतर किए। उनके बाद अनेक दशकों तक कोई प्रतिभाशाली नाटककार हुआ ही नहीं। इस कारण मौलिक नाटक-लेखन में बहुत कमी आई और वह रंगमंच से कटता भी गया। एक दौर तो ऐसा आ गया जब नाटक सिर्फ पाठ्यक्रमों के लिए ही लिखे जाते थे, क्योंकि प्रदर्शन के लिए न तो मंडलियां थीं, न अनुभवी अभिनेता, न रंगशालाएँ और न पर्याप्त संख्या में नाटक प्रेमी दर्शक।

भारतेंदु के युग से ही इस शताब्दी के मध्य तक पारसी रंगमंच के लिए अनेक नाटक लिखे गए।

पारसी रंगमंच का दौर खत्म होने पर उसके लिए लिखे गए अधिकांश नाटक बेकार हो गए।

इसलिए जब आजादी मिलने के बाद नए सिरे से रंग आंदोलन देश के विभिन्न हिंदी भाषी केन्द्रों में, विशेषकर

Scanned by CamScanner

महानगरों में, शुरू हुआ तो हिंदी में रंगमंच के उपयुक्त नाटक नहीं के बराबर थे। यह कमी तब और भी तीव्रता से महसूस हुई जब १९६० के आसपास कुछ ही वर्षों में नए भावबोध और नई रंगदृष्टि वाले निदेशक श्यामानंद जालान, हबीब तनवीर, सत्यदेव दूबे, इब्राहिम अलकाजी, राजिंदरनाथ, सत्यव्रत सिन्हा आदि हिंदी रंगमंच की ओर आकर्षित हुए। इसलिए उभरते हुए हिंदी रंगमंच की जरूरतों के लिए उपेन्द्रनाथ अश्क, जगदीशचंद्र माथुर और कुछ बाद में मोहन राकेश या लक्ष्मी नारायण लाल के नाटक एकदम नाकाफी थे।

ऐसी स्थिति में इन निदेशकों की ही नहीं, नए रंग आंदोलन से जुड़े अनेक अन्य व्यक्तियों की नजर देश की अन्य भाषाओं के, खासकर बांग्ला, मराठी, कन्नड़, गुजराती जैसी भाषाओं के नाटकों पर गई जिनमें रंगमंच समृद्ध था और विविध शैलियों में रंगमंच के उपयुक्त सार्थक नाटक मौजूद थे या लिखे जा रहे थे।

संयोग से तभी सातवें दशक में देश की कई भाषाओं में अनेक नाटककार एक साथ उभरकर सामने आए, जैसे, बांग्ला में बादल सरकार, मोहित चटर्जी, तरुण राय, मनोज मित्र, उत्पल दत्त, मराठी में विजय तेंडुलकर चिंतामणि खानोलकर, कन्नड़ में गिरीश करनाड, गुजराती में धुम्र राय, रसिक लाल पारीख आदि। इन लोगों ने अपनी भाषा के रंगमंच पर तो गहरा असर डाला ही, उनके नाटकों के अनुवादों से हिंदी में भी रंगमंच के उपयुक्त नाटकों की कमी बहुत दूर हुई और देश भर में हिंदी रंगकार्य को अभूतपूर्व समृद्धि और गतिशीलता मिली।

इस तरह एक विशेष ऐतिहासिक परिस्थिति में भारतीय भाषाओं के बीच नाटकों के आदान प्रदान के लिए हिंदी अपने आप ही केन्द्रीय संपर्क भाषा बन गई और उसने पूरे भारतीय रंगमंच को आगे बढ़ाने में, बल्कि बहुत हद तक सभी भाषाओं के नाटकों को सुलभ बनाकर भारतीय रंगमंच की अवधारणा को ठोस और वास्तविक आकार देने में, महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आज स्थिति यह है कि देश की किसी भी भाषा में लगभग हर अच्छा नाटक लिखा जाते ही हिंदी में अनूदित हो जाता है और बहुभाषी महानगरों की हिंदी मंडलियों द्वारा प्रदर्शित होने से अन्य अधिकांश भाषाओं के रंगकर्मी भी उससे परिचित हो जाते हैं। इस प्रकार हर भाषा के नाटककार को एक देशव्यापी दर्शक वर्ग मिलने की संभावना बन जाती है।

हिंदी के अपने रंगकार्य पर इस परिस्थिति का मिला जुला असर पड़ा है। यह बात सच है कि जितने भारतीय नाटक हिंदी में अनूदित और प्रकाशित हुए हैं उतने देश के किसी भी अन्य भाषा में नहीं। इसमें भी कोई शक नहीं कि विभिन्न भाषाओं के तरह-तरह की शैली और शिल्प के नाटक सहज ही सुलभ हो जाने से हिंदी रंगकर्मी के सामने अपनी ही भाषा के नाटकों और नाटककारों पर निर्भर रहने की अनिवार्यता कम हो गई है। इसलिए हिंदी नाटक और नाटककार की उपेक्षा हुई है और हिंदी रंगकर्मी उस रंगमंच से जोड़ने और प्रोत्साहित करने की ओर पर्याप्त ध्यान नहीं देते।

यह भी सही है कि हिंदी के मौलिक नाटकों में इन विशेषताओं को लाने के लिए रंगकर्मियों और नाटककारों के बीच जैसा परस्पर सम्मान और सहयोग का रिश्ता चाहिए, उसके बनने में अनुवादों की बहुतायत के कारण रुकावट पड़ी है।

यह एक तरह का अचरज भरा विरोधाभास ही है कि अच्छे नाटकों, अनुभवी अभिनेताओं, व्यावसायिक मंडलियों और दर्शकों की बड़ी भारी कमी ही नहीं, लगभग अनुपस्थिति के बावजूद, हिंदी में नाट्य-प्रस्तुति का स्तर कई बातों में देश की हर भाषा से बेहतर है, या कम से कम समकक्ष अवश्य है। यह अपने आप में बड़ी उपलब्धि है जिसे नकारा नहीं जा सकता और जिसका सीधा संबंध अनूदित नाटकों की प्रस्तुतियों से है।

आवश्यकता इस बात की है कि हिंदी रंगकर्मी मौलिक लेखन को आगे बढ़ाने और नाटककार से जीवंत और सक्रिय सहयोग बढ़ाने की ओर भी पूरा ध्यान दें। क्योंकि यह निश्चित है कि अनूदित नाटकों से शिल्प में चाहे जितनी निपुणता हासिल कर ली जाए, रंगकार्य किसी क्षेत्र के जीवन और संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग तभी बन सकता है जब उस क्षेत्र की रोजमर्रा की जिंदगी और उसकी गहरी, बुनियादी और खास अपनी समस्याओं को, वहीं के रचनाकार इस क्षेत्र की भाषाओं में ही, नाटकीय रूप दें। हिंदी रंगमंच में यह काम अभी तक ठीक से नहीं हो पाया है। पर हिंदी रंगमंच का भविष्य बहुत कुछ इस चुनौती का सफलतापूर्वक सामना करने पर ही निर्भर है।

Scanned by CamScanner

बिदेसिया शैली के जनक : भिखारी ठाकुर

— अशोक प्रियदर्शी

बिहार की प्रसिद्ध लोकप्रिय भाषा रही है—भोजपुरी। भोजपुर, रोहतास, छपरा, सीवान, गोपालगंज आदि क्षेत्र के निवासी भोजपुरी भाषी हैं। लोकनृत्य और लोक नाट्य के लिए ये क्षेत्र काफी चर्चित रहे हैं।

भोजपुरी भाषा का लोक नाट्य "बिदेसिया" काफी लोकप्रिय रहा है। इस लोकनृत्य नाट्य की लोकप्रियता के प्रभाव से और भी अनेक नाटकों की रचना इस शैली के आधार पर की गई। आरम्भ में बिदेसिया नाटक का प्रदर्शन विवाह के अवसर पर किया जाता था। लेकिन, बाद में इस शैली के जनक भिखारी ठाकुर के शिष्य "बिदेसिया" नामक नाट्य मंडली बनाकर घूम-घूम कर नाटकों का मंचन करने और अपने तथा अपने परिवार की जीविका चलाते।

बिदेसिया। इस शब्द से ही स्पष्ट जानकारी प्राप्त होती है परदेसी। भोजपुर प्रदेश के लोग आजीविका के लिए पूर्व देश, कलकत्ता, जाया करते थे और वहीं के वातावरण में अपने को ढाल लेते थे। उन्हें अपनी मातृभूमि, बाल बच्चों, पत्नी, माता-पिता, भाई-बहन की तनिक भी सुधि नहीं रह जाती। घर के लोगों को अपने पति, पुत्र, भाई, पिता के आने की सदैव प्रतीक्षा रहती—लेकिन वे निराश ही होते। ऐसी अवस्था में उनकी विरहिणी पत्नियाँ विरह भावनाओं से भर कर चिट्ठी द्वारा अपना दुखद संदेश अपने पतियों तक पहुँचाती हैं। और तब उनका पति कलकत्ते की नौकरी छोड़कर लौटता है। विरह, सुख में परिवर्तित हो जाता है। इस तरह बिदेसिया, संदेश नाट्य या विरह नाट्य है, जिसमें विरहिणी नायिका अपने हृदय की भावाकुलता को भोजपुरी भाषा में व्यक्त करती है।

"बिदेसिया" लोक नाट्य के जनक भिखारी ठाकुर हैं। बंगाल की जात्रा पार्टी, रामलीला और नौटंकी जैसी लोकनाट्य विधा ने भिखारी ठाकुर को ग्रामीण परिवेश में "बिदेसिया रंगमंच" जैसी कला की बुनियाद रखने के लिए प्रेरित किया।

भिखारी ठाकुर में जन्मजात काव्य तथा अभिनय के गुण विद्यमान थे। इनका जन्म शाहाबाद जिले के कुतुबपुर गाँव में १८८७ ई० को हुआ था। यह गाँव गंगा-सरयू के दियारे में बसा था जो किसी बाढ़ की चपेट में पड़कर आरा जिले से कट कर सारण जिले की सीमा से जुड़ गया। तबसे उसे 'नयका टोला' भी कहा जाने लगा और भिखारी ठाकुर को छपरा जिला का निवासी कहा जाने लगा। अपने जन्म के बारे में उन्होंने स्वयं लिखा है :—

"बारह सौ पंचानवे जहिया,
सदी पूस पंचमी रहे तहया।
रोज सोमार ठीक दुपहरिया,
जनम भईल ओही घरिया।"

भिखारी ठाकुर की शिक्षा-दीक्षा पढ़ने-लिखने भर भगवान नामक बनिया से प्राप्त हुई। पुस्तैनी हजामत बनाने का कार्य वे करते रहे। इसी सिलसिले में उन्होंने खड़गपुर, मिदनापुर, जगन्नाथपुरी आदि स्थानों का भ्रमण किया। मिदनापुर में उन्हें रामलीला देखने का अवसर मिला। रामलीला से वे इतने प्रभावित हुए कि अपने गाँव कुतुबपुर लौटने पर उन्होंने "रामलीला मंच" की स्थापना की। तीस वर्ष की

Scanned by CamScanner

अवस्था में रामलीला और बंगाल की जात्रा पार्टी ने उन्हें इतना आन्दोलित किया कि वे विदेसिया नाटक की रचना में संलग्न हो गये और इसका प्रचार घूम-घूम कर बिदेसिया रंगमंच द्वारा करने लगे।

बिदेसिया लोक रंगमंच का अबतक पूरी तरह अध्ययन विवेचन नहीं किया जा सका है। भिखारी ठाकुर ने बिदेसिया लोक रंगमंच के माध्यम से ग्रामीण जीवन का सही चित्रण अपने नाटक में खींचा है। समाज सुधार के मूल उद्देश्य से लिखित इनके नाटक छोटे किन्तु हृदयस्पर्शी होते थे। उन्हें मानव हृदय की अनुभूतियों का गंभीर अनुभव था। परिसंवाद सभी नाटकों के गीति काव्य में ही दिये गये हैं। उनके प्रसिद्ध गीति नाट्य हैं —राधेश्याम, द्रौपदी पुकार, भाभी विलाप, गंगा स्नान, भाई विरोध, पुत्रबध, विधवा विलाप, राम विवाह, कृष्ण लीला, बेटी वियोग, ननद भौजाई आदि। "जय हिन्द" गीति नाट्य की सफल रचना और प्रदर्शन पर भिखारी ठाकुर को अनेक पुरस्कार एवं पदक प्राप्त हुए।

उनमें अभिनय, नृत्य, गीत आदि सारी कलाएँ विद्यमान थीं। बाबूलाल, महेन्द्र घिनावन, तकजूल, अलीजान, जगदेव, रामलखन, जूठन आदि इनके बिदेसिया रगमंच के गुणी कलाकार रहे हैं जिनकी सराहना भिखारी ठाकुर ने स्वयं की है।

जहाँ एक ओर भिखारी ठाकुर के नाटकों में समाज सुधार देखने को मिलता है वहीं दूसरी ओर रामलीला, यात्रा पार्टी, जगन्नाथपुरी एवं तुलसीदास रचित रामचरित मानस के प्रभाव से उनके हृदय में भक्तिभावना भी उत्पन्न हुई और उन्होंने भक्ति और शृंगार के परस्पर विरोधी भावों का सामंजस्य राम और कृष्ण की मधुरोपासना के द्वारा स्थापित किया और उसकी अभिव्यक्ति के साधन स्वरूप उन्होंने लोक रंगमंच की प्रतिष्ठा की। राम विवाह, कृष्ण लीला, राधेश्याम आदि सहज सरल शब्दों में, लोक-धुन में रचित नाट्य भिखारी ठाकुर की अमर रचना कही जायगी। संयोग-विप्रलंभ, हास्य-करुण, कौतूहल आदि रस इनके नाटकों में देखने को मिलते हैं। बिदेसिया शैली में रचित गीति नाटक भिखारी ठाकुर एवं बिहार की लोककला को सदैव अमर रखेगा।

With best compliments from: Ph. 54526

VISIT FOR ACCURATE FITTINGS

SANTOSH OPTICAL WORKS

OPHTHALMIC OPTICIANS

(Opp. Patliputra Furniture, Near Globe Almirah)

R. K. Avenue (Nala Road), PATNA-800004

Scanned by CamScanner

With Best Compliments from :

ADCARE

PHONE : 232282

'PARIWAR', Boring Canal Road, PATNA-1

FOR BEST RESULTS IN ADVERTISEMENT THROUGH

Hoarding Boards, Glow Sign Boards, Kiosks, Wall-Paintings,

News Paper Ads., Cinema Slides,

Dealers Boards & Screen Jobs etc.

VISIT for

—Plain Paper copiers

—Power supply system

—Servo

—C. V. T.

—U. P. S. etc.'

Sales-&-Service

YEARLY SERVICING CONTRACT ALSO AVAILABLE

M\s OFFICE AUTOMATION SYSTEM

'PRAN' 1st Floor,

R. K. Bhattacharya Road,

Patna-800001

Scanned by CamScanner

With Best Compliments From

ACHEMIC

Pharmaceuticals (INDIA) Private Ltd.

HYDERABAD

(IN PURSUIT OF EXCELLENCE)

Scanned by CamScanner

हिन्दी नाटक :
उद्भव, विकास और समस्यायें

—कुमार शांतरक्षित

पृथ्वी पर नाटक का आरम्भ सर्वप्रथम भारतवर्ष में ही माना जाता है। यहाँ के प्राचीन ग्रन्थों से ज्ञात होता है कि आज से कई हजार वर्ष पहले, त्रेतायुग में ही, महर्षि ब्रह्मा की इच्छा पर नाटकरूपी पंचमवेद की रचना की गई थी। देवलोक में प्रदर्शित 'अमृतमंथन' एवं 'त्रिपुरदाह' शीर्षक नाटकों की भी चर्चा आई है।

लगभग सत्रहवीं शताब्दी के प्रारम्भ से गिने-चुने नाटक सामने आने लगे। उन्हें हम मौलिक हिन्दी नाटक नहीं मान सकते, क्योंकि वे मुख्यतः लोकनाटक या अनूदित नाटक थे। मौलिक रचना से प्रारम्भिक युग अभावग्रस्त था।

हिन्दी का पहला नाटक कौन था, कब लिखा गया यह अबतक विवाद का विषय बना है। उस युग के प्रमुख नाटक रामायण महानाटक (१६१०), हनुमन्नाटक (१६२३), आनन्द रघुनन्दन, नहुष (१८४१), शकुन्तला आदि है। 'नहुष' नाटक को भारतेन्दु ने पहला मौलिक नाटक कहा है। इनमें अधिकांश नाटक संस्कृत से अनूदित या प्रभावित थे।

हिन्दी नाट्य साहित्य में मौलिक नाटकों का आगमन भारतेन्दु युग से माना जाता है। इस युग में अनूदित नाटकों के साथ-साथ मौलिक नाटक भी लिखे गये। स्वयं भारतेन्दु ने सात मौलिक नाटक और नौ अनूदित नाटक लिखे। उनके मौलिक नाटकों में—वैदिकी हिंसा-हिंसा न भवति, भारत दुर्दशा, चन्द्रावली आदि हैं। बाल कृष्ण राव, राधाचरण गोस्वामी, राधा कृष्ण दास, प्रताप नारायण मिश्र, प्रेमघन आदि उस युग के अन्य नाटककार थे। भारतेन्दु युग के नाटकों के विषय ऐतिहासिक, सामाजिक और पौराणिक थे। भारतेन्दु स्वयं कुशल लेखक ही नहीं, मंच के अनुभवी अभिनेता भी थे। भारतेन्दु युग के नाटकों की एक प्रमुख विशेषता यह थी कि वे उस युग के पुनर्जागरण के तत्वों से अनुप्राणित थे।

भारतेन्दु के बाद जयशंकर प्रसाद का बहुआयामी व्यक्तित्व सामने आया। प्रसादयुगीन नाटकों में राष्ट्रीय चेतना उभरकर सामने आयी, क्योंकि यह स्वाधीनता संग्राम का युग था और साहित्य, सामाजिक और राजनीतिक पटल पर उठ रही आंधी से स्वयं को अलग नहीं रख पाया था। प्रसाद ने तेरह नाटक लिखे जो मूलतः ऐतिहासिक हैं। मनुष्य का अपने अतीत से लगाव होता है। प्रसाद ने भारतीय इतिहास के उन गौरवशाली पृष्ठों को उलटा जो अतीत के अध्याय बन चुके थे। ऐतिहासिक पात्रों को तथा भारतीय इतिहास के उज्ज्वल पक्षों को समेट कर उन्होंने स्वतन्त्रता-संग्राम के सेनानियों के लिए एक शक्तिशाली प्रेरणास्त्रोत प्रदान किया। उनके प्रमुख नाटक हैं—राज्य श्री, चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त, अजातशत्रु, ध्रुवस्वामिनी आदि। अपनी रचनाओं में नारी को उत्कृष्ट और गरिमामय स्थान प्रदान कर उन्होंने नारी उत्थान के लिए प्रयासरत सामाजिक-धार्मिक सुधारकों की मदद की। परन्तु क्लिष्ट और तत्समयुक्त भाषा, लम्बे संवादों और मंचीय त्रुटियों के कारण प्रसाद के नाटक पठनीय ही रह गये। रंगमंच पर नहीं आ सके।

प्रसाद युग में अधिक नाटककार नहीं हुए। फिर भी हम गोविन्द वल्लभ पंत, मिश्र-बन्धु, चतुरसेन शास्त्री, जी० पी० श्रीवास्तव आदि को नहीं भूल सकते। इनमें से अधिकांश सरल शैली के कारण जनता तक पहुँचने में कामयाब हुए।

प्रसादोत्तर नाटकों में काफी वैविध्य है। जहाँ तक विषय का प्रश्न है, प्रसादोत्तर नाटकों में युगीन चेतना, पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव, प्राचीन रूढ़ियों और

Scanned by CamScanner

परम्पराओं का पुनर्मूल्यांकन, भारतीय संस्कृति की नवीन व्याख्या, व्यक्ति की समस्याओं तथा उलझनों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, पूंजीवाद एवं सामन्तवाद का विरोध, नारी समस्याओं का चित्रण आदि प्रखर होकर आये।

नाट्यविधा की दृष्टि से यह स्वर्णकाल है। एकांकी, गीतिनाट्य, रेडियो नाटक, प्रहसन, रूपक, झलकियां, नुक्कड़ नाटक आदि के रूपों में नाटक आया है। टी० वी० नाटकों के कारण नाटक और सिनेमा की दूरी इस कदर घटने लगी है कि कई बार दोनों में अन्तर करना कठिन हो जाता है। यह एक चिन्तन का विषय है।

प्रसादोत्तर युग के प्रमुख नाटकारों में रामवृक्ष बेनीपुरी, जगदीशचन्द्र माथुर, लक्ष्मी नारायण लाल, लक्ष्मी नारायण मिश्र, मोहन राकेश, उपेन्द्र नाथ अश्क, धर्मवीर भारती, रमेश मेहता, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, डा० गिरीश रस्तोगी, डा० रामकुमार वर्मा, चतुर्भुज, रामेश्वर सिंह कश्यप, चिरंजीत, जितेन्द्र सहाय, विष्णु प्रभाकर, वृन्दावन लाल वर्मा, आदि के नाम आते हैं। इन नाटककारों ने विषय-वैविध्य के साथ साथ अलग अलग माध्यमों से नाटक को संवारा, सजाया और निखारा है। इससे नाटक को विस्तार प्रदान करने में सफलता मिली है।

हिन्दी रंगमंच को पल्लवित और पुष्पित होने में अनेक समस्यायें भी हैं। अहिन्दी नाटकों को अनूदित कर हिन्दी नाटक के रूप में मंचन करने की प्रवृत्ति तेजी से बढ़ी है। ऐसी बात नहीं है कि हिन्दी में मौलिक नाटक हैं ही नहीं। हिन्दी में अच्छे नाटक हैं। उन्हें अपनाने की आवश्यकता है। इससे हिन्दी के नाटककारों का न केवल उत्साहवर्धन होगा, बल्कि हिन्दी नाटक भी समृद्ध होगा।

नाटकों के चयन में बरती गई असावधानी दर्शकों को हिन्दी नाट्यमंच से दूर करती जा रही है। कोई आवश्यक नहीं कि जो नाटक महानगरों में लोकप्रिय हुए, वे छोटी जगहों में भी सफल हों। दर्शकों का मानसिक स्तर हर जगह एक जैसा नहीं होता। नाटक चयन करते समय स्थानीय दर्शकों के मानसिक स्तर का अक्सर हम ध्यान नहीं रखते।

यथार्थ-चित्रण करने के प्रयास में नाटक की मर्यादा भंग होती जा रही है। असामाजिक विषयों जैसे हत्या, सेक्स, डकैती, हिंसा, गालियों से भरे संवाद से आज का नाटक भरता जा रहा है। परिवार सहित ऐसे नाटक को देखना कैसा पीड़ादायक है—यह एक भुक्तभोगी ही समझ सकता है। नाटक एक कला है। कला का अर्थ ही है किसी तथ्य को कलात्मक या सुरुचिपूर्ण स्वरूप देना।

नाटक की सफलता के लिए यांत्रिक तकनीक का उपयोग वहाँ तक स्वागतयोग्य है, जहाँ तक वे नाटकीय परिदृश्य को उभारने में मदद करते हैं। पर यदि लाइट, सेट्स, साउण्ड इफेक्ट्स नाटक के मूल कथानक को दबा दें तो यह नाटकीय अस्तित्व के लिए खतरा है।

हमारे देश में ग्रामीण जनता का बाहुल्य है, पर अधिकतर नाटक शहरी परिवेश को ध्यान में रखकर ही लिखे गये हैं। यह अध्ययन का विषय है कि सचमुच उस विशेष लोकशैली का निर्वाह उस नाटक विशेष में हुआ है या नहीं। अगर हाँ, तो वह स्वागत योग्य है।

इनके अलावा नाटक में होने वाले खर्च, प्रेक्षागृहों की कमी, बढ़ते किराये, कलाकारों में बढ़ती अनुशासन-हीनता, सरकारी सहयोग का अभाव, रिहर्सल के स्थान की कमी आदि अनेक समस्यायें है—हिन्दी रंगमंच के सामने।

हिन्दी में अच्छे नाटकों का अभाव नहीं है। और भी अच्छे नाटक लिखे जा सकते हैं। लेकिन यह तभी सम्भव है जब हिन्दी के रंगकर्मी हिन्दी के नाटककारों को उचित प्रोत्साहन दें। हिन्दी में नाटककार-निर्देशक—रंगकर्मी का समन्वय समय की मांग है। हिन्दी के अच्छे नाटकों का अनुवाद दूसरी भाषाओं में भी होना चाहिए जो हो नहीं रहा है। क्यों ?

Scanned by CamScanner

मुस्कुराहट मंच पर

—शिव प्रिय वर्मा

एक बच्चा ताजमहल देखने आगरा गया। वहाँ बहुत से विदेशी ताजमहल की चर्चा कर रहे थे। बीच-बीच में वे किसी बात पर हँसने लगते थे। बच्चे को उनकी बात समझ में नहीं आई। वो अपनी माँ से कहने लगा "मम्मी ये लोग पता नहीं कौन सी भाषा में बात करते हैं। लेकिन एक बात है, ये हँसते हिन्दी में है !"

ये पुराना लतीफा आपको सुनाने का उद्देश्य मात्र इतना है कि मैं ये बता सकूँ कि या तो कोई भाषा नहीं होती, या फिर दुनिया की तमाम भाषाओं में हँसी एक ही तरह की होती है।

शेक्सपीयर की कृति 'कॉमेडी ऑफ एरर्स' एक ऐसा नाटक है जिसका प्रत्येक घटनाक्रम हँसने को मजबूर कर देता है। आप बिलकुल अकेले कमरे में बैठे यदि ये नाटक पढ़ रहे हों तो मेरा ख्याल है कि बाहर से देखने वाला आपको पागल जरूर समझेगा। लेकिन कई बार मंच पर चल रहे नाटकों में कुछ 'एरर्स' ऐसे हो जाते हैं जो संजीदा से संजीदा नाटकों में 'कामेडी' भर देते हैं। कई बार ये जान-बूझकर किए गये होते हैं और कई बार हो जाते है।

टुण्डला (उत्तर प्रदेश) रेलवे कॉलोनी में होनेवाली रामलीला की याद आज भी ताजा है। रावण अपने मंत्री को लेकर सीता हरण के लिए निकला है। मंत्री झाड़ियों में छिपा है। राम स्वर्ण-मृग के पीछे और लक्ष्मण उनके पीछे जा चुके हैं। रावण को भिक्षा देने सीता लक्ष्मण-रेखा के बाहर आती हैं। सारे दर्शक दम साधे अगले दृश्य की प्रतीक्षा कर रहें हैं (धार्मिक नाटकों में सारी कथा जानते हुए भी 'सस्पेन्स' बना रहता है।)। तभी रावण जोर से चिल्लाता है, "मंत्री ! ! !" और मंत्री झाड़ियों से रिक्शा लिए निकलता है और रावण उस पर सीता को बिठाकर दूसरे मुहल्ले की तरफ निकल जाता है। दर्शकों के लिए इस अप्रत्याशित घटना पर अपनी हँसी रोके रखना कठिन होता है।

बिहार में रंगमंच से जुड़ा व्यक्ति महावीर सिंह आजाद के नाम से अपरिचित न होगा। वे एक घटना सुनाया करते थे अपने जवानी के दिनों की। एक नाटक के अन्तिम दृश्य में उन्हें लम्बा भावपूर्ण संवाद कहकर खुद को चाकू मारकर आत्महत्या करनी थी। उन्होंने यह संवाद इतने संजीदा ढंग से पेश किया कि बहुतों के तो आँसू निकल आये, और जब संवाद समाप्त कर उन्होंने सीने में खंजर उतार लिया तब तो पूरा हॉल तालियों से गूँजने लगा। तालियों की आवाज ने उस 'लाश' में जान डाल दी और वे उठ खड़े हुए। और फिर से पूरा संवाद बोलकर दुबारा 'आत्महत्या' कर ली इस तरह से एक पूरा दुखान्त नाटक सुखान्त सम्पन्न हुआ। पारसी नाटकों में ऐसा हुआ करता था।

मंच से जुड़े व्यक्ति के लिए ये भूलें जो हास्य पैदा करती हैं कोई नई नहीं हैं। पर कुछ जानकर भी की गई भूल होती है, जो हास्य पैदा करती है अपने फूहड़पन से। मसलन हाल ही में सम्पन्न दूरदर्शन धारावाहिक 'महाभारत' का एक प्रसंग (महाभारत प्रेमियों की भावनाओं को ठेस पहुँची हो तो क्षमा याचना सहित)—भीम का पंजाबी लहजे में हिन्दी बोलना—

"ये मेरा पुत्र 'कटोत्कच' है।" "इसे आशीर्वाद दीजिए।" आदि। या फिर याद कीजिए महारथी अर्जुन का वो रुदन जिसे देखकर यह नहीं लगता था कि वह अपने पितामह या गुरूदेव के लिए किया गया विलाप है, बल्कि ऐसा प्रतीत होता था मानो शकुंतला वन-वन विलाप करती भटक रही है महाराजा दुष्यन्त के वियोग में।

Scanned by CamScanner

मगध कलाकार की

आगामी नाट्य प्रस्तुति

पाटलिपुत्र का राजकुमार

लेखक : चतुर्भुज

निर्देशक : अनन्त कुमार

Scanned by CamScanner

* चतुर्भुज-साहित्य *

ऐतिहासिक नाटक :—पीरअली, सिकन्दर—पोरस, मुद्राराक्षस, शिवाजी, पाटलिपुत्र का राजकुमार, बहादुरशाह, झाँसो की रानी, नूरजहाँ, मीरकासिम, अरावली का शेर, सिराजुद्दौला, कलिंग—विजय, कृष्णकुमारी, कुँवरसिंह, भगवान बुद्ध, मोर्चे पर।

पौराणिक नाटक :—रावण, शकुन्तला, कंसवध, कर्ण, श्रीकृष्ण, भीष्म—प्रतिज्ञा, मेघनाद।

अन्य ग्रंथ :—बन्द कमरे की आत्मा (सामाजिक नाटक), झेलम के किनारे (एकांको संग्रह), विजय-तिलक (एकांकी—संग्रह), इतिहास बोल उठा (कहानी—संग्रह), कमरे की छाया (कहानी—संग्रह), औरंगजेब (इतिहास)।

अंगरेजी में :—The Great Historical Dramas, The Rani of Jhansi, Memoires of William Tayler.

अनन्त कुमार लिखित पुस्तकें :—बुद्धकालीन राजगृह, बेखवर जी की शादी (प्रहसन)।

सम्पर्क—सूत्र

मगध कलाकार प्रकाशन,

१०६, श्रीकृष्ण नगर, पटना - ८००००१

Scanned by CamScanner

आपसी मेल-एकता और सद्भावना .....

कौम की असल ताकत है

भाषा, जाति और धर्म से ऊपर उठकर

हम सब एक हैं

हमारा देश न किसी विशेष सम्प्रदाय का देश है, न किसी विशेष धर्म का। यह सभी सम्प्रदायों, भाषाओं, धर्मों एवं संस्कृति का देश है। हिन्दू, मुसलमान, सिख, इसाई, आदि सभी के ताने-बाने से यह देश बना है। कवीन्द्र रवीन्द्र और काजी नजरूल इसलाम या दिनकर और इकवाल सभी ने इसके गीत गाए हैं। तुलसी और कवीर के गीत आज भी इस देश के गाँव-घर में गाए जाते हैं। विभिन्नता में एकता हमारी विशेषता है। यह आज की नहीं, सदियों की बनी परम्परा है। यही हमारी धरोहर है। आइए, हम सब मिलकर इस गोरवशाली परम्परा को और समृद्ध बनावें।

.....

मजहब नहीं सिखाता आपस में वैर रखना
हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दुस्तां हमारा

--सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, बिहार द्वारा प्रसारित।

सू० ज० स० नि०-202 स० [सू०-149] 90-91

Scanned by CamScanner

क्या आप जीवन की विविधताओं में विश्वास रखते हैं ?

यदि हाँ

तो

बिहार आइए

गौरवशाली अतीत और विकासशील वर्त्तमान के साथ नैसर्गिक सुषमा का धनी बिहार आपको पर्यटन का बहुआयामी सुख देगा।

यदि आप धार्मिक व्यक्ति हैं तो सभी धर्मों का केन्द्र भी है बिहार। यदि आप प्रकृति के पुजारी हैं तो फिर छोटानागपुर आइए और यहां के वनस्थलियों, पर्वत श्रृंखलाओं, जल प्रपातों जैसे हुंडरू, नेतरहाट, राजरप्पा आदि की सैर का मखमली आनन्द लीजिए और रोमांच पसंद करें तो हजारीबाग और बेतला के घने और विशाल राष्ट्रीय उद्यानों में वन्य जीवों के बीच विचरिए।

बिहार का पर्यटन यानि गागर में सागर। यहां के सीधे-सादे लोग, यहाँ की संस्कृति, यहाँ की कला, यहाँ के उत्सव आपको बरबस बांध लेंगें। आप एक बार बिहार आइए, आप यहाँ बार-बार आना चाहेंगे।

राज्य सरकार ने बिहार पर्यटन को उद्योग घोषित किया है और पर्यटन संबंधी हर सुविधा आपको उपलब्ध कराने के लिए कृत संकल्प है।

सम्पर्क करें :-

पर्यटक सूचना केन्द्र, मजहरूल हक पथ, पटना, दरभंगा
दूरभाष संख्या—25295
पर्यटक सूचना केन्द्र, कचहरी परिसर, राँची
दूरभाष सं०—20426

--:: सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग द्वारा प्रसारित। ::--

सू० ज० स० नि० 202 स० [सू०—149] 90-91

Scanned by CamScanner

चतुर्भुज : संस्थापक-निर्देशक

'नूरजहाँ' नाटक का एक दृश्य

शकुन्तला नाटक का एक दृश्य

Scanned by CamScanner

महात्मा गांधी के व्यावहारिक आर्थिक सिद्धान्तों पर आधारित
खादी-ग्रामोद्योगों के कार्यों में सतत् संलग्न

बिहार राज्य खादी-ग्रामोद्योग बोर्ड

०ग्रामीण कामगारों ०निश्चित बेरोजगारों एवं महिलाओं के स्वावलम्बन एवं आर्थिक समृद्धि के लिए निरन्तर प्रयत्नशील है।

परम्परागत ग्रामोद्योगों के अलावा नये ग्रामोद्योगों में कार्यरत ग्रामीण कामगारों को आर्थिक, तकनीकी एवं प्रशिक्षण की सुविधायें प्रदान कर बोर्ड ने लगभग ३ हजार संस्थाओं / समितियों, ४५ हजार व्यक्तिगत ईकाइयों को आर्थिक सहायता प्रदान का है तथा २८ हजार ६०४ पुरुषों एवं महिलाओं को प्रशिक्षित कर उन्हें स्वावलम्बी बनने की प्रेरणा दी है।

खादी—ग्रामीण तेल, अनाज प्रशोधन, गुड़ खांडसारी, ताड़-गुड़, चर्मोद्योग, कुम्भकारी, रेशा, लोहारगिरी-बढ़ईगिरी, मधुमक्खी पालन, गोबर गैस, चूना, दियासलाई, हाथ कागज, अखाद्य तेल एवं साबुन, लाह-निर्माण, जंगली जड़ी बूटी, फल सरक्षण, बास एवं बेंत के कार्य, गोंद निर्माण, कत्था निष्कासन, सेवा उद्योग, वस्त्र उद्योग पोलीवस्त्र, छाता उद्योग, खस-टट्टी निर्माण एवं फोटो फ्रेम जैसे ग्रामोद्योगों के माध्यम से ग्रामीणों की बुनियादी जरूरतों की पूर्ति हो ही रही है एवं उन्हें आजीविका भी प्राप्त हो रही है।

राज्य की ग्रामीण आबादी के संरक्षण एवं आर्थिक विकास के लिए बोर्ड के ३४ जिला कार्यालय, ४६ उत्पादन केन्द्र तथा २८ बिक्री भवन कार्यरत हैं।

विशेष जानकारी के लिए हमारे जिला के खादी-ग्रामोद्योग पदाधिकारी तथा मुख्यालय के विकास पदाधिकारी से, बिहार राज्य खादी ग्रामोद्योग बोर्ड, पटना-४ में सम्पर्क करें।

बिहार राज्य खादी ग्रामोद्योग बोर्ड द्वारा प्रचारित

Scanned by CamScanner